ૐકાર ફાઉન્ડેશન ટ્રસ્ટ
'માનવસેવા એ જ ઈશ્વરસેવા'
ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-6 अंक : 78

सहयोग शुल्क : रु. 1 / जून: 2023

# दिव्यांग सेतु

संपादक :- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

शिक्षा दिव्यांगों की आत्मनिर्भरता की सीढ़ी है

– संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

दिव्यांगों की शिक्षा आत्मनिर्भरता की ओर पहला कदम है

– प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

# निरामय हेल्थ पॉलिसी

## पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेबल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

## लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

## आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

### सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- ✓ वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- ✓ राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- ✓ निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- ✓ बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- ✓ बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

# संपादकीय

जहां चाह है वहां राह है, और यह चाह किसी एक व्यक्ति की भी हो सकती है, किसी समुदाय की, किसी नागरिक संगठन की और राज्य या केन्द्र सरकार की भी । हमारे इस अंक में ऐसी ही चाह के चलते जिन्होंने समाज और देश को राह दिखाई है ऐसे लोगों की बातें है । केवल चार साल की उम्र में दिव्यांग बने एच.बोनिफेस प्रभु ने अपनी दिव्यांगता की मर्यादाओं को लांघकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपना और पूरे देश का नाम रोशन किया है । यह इसलिए संभव हुआ क्योंकि उनकी चाह थी इसलिए उस चाह तक पहुंचने की राह वे ढूंढ पाए हैं । एच.बोनिफेस.प्रभु ने केवल दिव्यांगों को ही नहीं बल्कि जो लोग मर्यादा रहित है और साधारण जीवन जी रहे हैं उन्हें भी राह दिखाई है । श्री एच.बोनिफेस प्रभु को देश भर के लोगों द्वारा विभिन्न दैवीय कारणों से प्यार किया जाता है और भारत में व्हीलचेयर टेनिस के पिता के रूप में सम्मानित किया जाता है ।

आज जब कि पूरे देश में खेल के रुप में केवल क्रिकेट को ही अधिक सम्मान मिल रहा हो, हर छोटे बडे के मुंह पर क्रिकेट के खिलाडियों के ही नाम हो ऐसे समय में अपनी मर्यादा के कारण व्हीलचेयर टेनिस जैसे खेल को अपनी राह बनाकर केवल नाम ही रोशन नहीं किया बल्कि हर छोटे बडे के लिए नयी राह भी दिखाई है । भारत सरकार के चौथे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म श्री से सन्मान्ति खिलाडी को कितने लोग उसके खेल के श्रेष्ठ प्रदर्शन के कारण जानते है यह सोचनेवाली बात है । उम्मीद करते हैं कि एच.बोनिफेस प्रभु को उनकी मर्यादाओं के कारण नहीं उनकी असिमीत क्षमताओं के कारण देश पहचाने ।

दिव्यांग छात्रों के लिए शिक्षा की राह में कभी कोई बाधा उत्पन्न न हो इसलिए राज्य और केन्द्र सरकार द्वारा शिष्यवृत्ति की सुविधा दी जा रही है । सरकार के इस कदम की सराहना होनी चाहिए । दिव्यांग छात्रों की शिक्षा को अधिक सुगम बनाने के लिए सरकार प्रशंसनीय कदम उठा रही है । सरकार की इस चाह को राह भी मिल रही है । अधिक से अधिक छात्र सरकार की शिष्यवृत्ति योजना का लाभ लेकर आत्मनिर्भर बनें यही हमारी शुभकामना है ।


दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

जून : 2023, पृष्ठ संख्या : 16

वर्ष-6 अंक : 78

**प्रेरणास्त्रोत और संपादक**

मंत्रयुगपरिवर्तक ॐकार महामंडलेश्वर १००८
प. पू. संतश्री सद्‌गुरु ॐऋषि स्वामी ।

**सह-संपादक**

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

**संपर्क-सूत्र**

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

**मुद्रक**

**प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.**

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200

# जहां चाह है वहां राह है ....4 साल की उम्र में चतुर्भुज बनने से लेकर कई व्हीलचेयर खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने तक - एच बोनिफेस प्रभु एक फाइटर हैं

अगर कोई चीज विजेताओं को हार मानने वालों से अगल करती है तो वह है उनका बूलंद हौसला, और न रुकने वाली उनकी दौड । ये वे लोग होते हैं जो अपनी किसी भी तरह की मर्यादा को अपनी सफलता के लिए बाधा नहीं मानता फिर चाहे वह शारीरिक मर्यादा हो या मानसिक । भगवान न करे अगर आप 4 साल की उम्र से व्हीलचेयर तक ही सीमित रहे, तो खेल शायद ही आपके कामों की सूची में शामिल होगा । लेकिन यही वह चीज है जो विजेताओं को हार मानने वालों से अलग करती है और एच बोनिफेस प्रभु निश्चित रूप से विजेता हैं । यह आदमी कौन हे? खैर, उनका नाम शायद ही औसत खेल प्रशंसक के लिए घंटी बजाएगा, लेकिन उन्होंने कई व्हीलचेयर खेलों में देश का प्रतिनिधित्व किया है । उन्हें देश भर के लोगों द्वारा विभिन्न दैवीय कारणों से प्यार किया जाता है और भारत में व्हीलचेयर टेनिस के पिता के रूप में सम्मानित किया जाता है । वह बेंगलुरु में भारतीय व्हीलचेयर टेनिस अकादमी के संस्थापक हैं, जो दिव्यांग लोगों को उनकी प्रतिभा को निखारने का अवसर देकर उन्हें बढ़ावा देती है ।

हैरी बोनिफेस प्रभु एक भारतीय चतुर्भुज व्हीलचेयर टेनिस खिलाड़ी हैं, जो भारत में खेल के अग्रदूतों में से एक हैं और 1998 विश्व चैंपियनशिप में पदक विजेता हैं । उन्हें 2014 में भारत सरकार द्वारा चौथे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म श्री से सम्मानित किया गया था । उनका जन्म 14 मई 1972 को बैंगलोर, कर्नाटक में हुआ था । 4 साल की उम्र में त्रासदी से पहले प्रभु का जन्म किसी भी अन्य बच्चे की तरह ही हुआ था और उनका जीवन तब बदल गया जब

एक खराब काठ पंचर ने उन्हें जीवन भर के लिए चतुर्भुज बना दिया । लेकिन यहां इसका श्रेय उसके माता-पिता को जाता है क्योंकि उन्होंने उसके साथ कोई अलग व्यवहार नहीं किया और उसे उन्हीं संस्थानों में भेज दिया जहां सामान्य बच्चे पढ़ते थे । ऐसा नहीं है कि उनकी हालत कुछ असामान्य थी । उनकी अपार मेहनत और समर्पण ने उन्हें एक उल्लेखनीय व्यक्ति और एक अग्रणी चतुर्भुज व्हीलचेयर टेनिस खिलाड़ी बना दिया है । बोनिफेस प्रभु एक ट्रस्ट के संस्थापक हैं, शारीरिक और बौद्धिक रूप से दिव्यांग लोगों को बढ़ावा देने और उन्हें अपनी प्रतिभा को निखारने के अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से, बैंगलोर में स्थित बोनिफेस प्रभु व्हीलचेयर टेनिस अकादमी चला रहे हैं, यह अकादमी अलग-अलग सक्षम लोगों को मुफ्त खेल प्रशिक्षण प्रदान करती है ।

खेल करियर -हालांकि बोनिफेस की प्रसिद्धि का मुख्य कारण व्हीलचेयर टेनिस है, उन्होंने अन्य विषयों में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों में छह विषयों में 50 से अधिक बार भारत का प्रतिनिधित्व किया है । इनमें व्हीलचेयर टेनिस के अलावा एथलेटिक्स, शॉट पुट , बैडमिंटन , भाला फेंक, टेबल टेनिस , निशानेबाजी और डिस्कस थ्रो शामिल हैं । अंतर्राष्ट्रीय खेलों में उनका प्रवेश 1996 विश्व व्हीलचेयर खेलों, यूके में हुआ था, जहां उन्होंने शॉट पुट में स्वर्ण पदक और चक्का फेंक में रजत पदक जीता था। दो साल बाद, उन्होंने 1998 के पैरालिंपिक विश्व चैंपियनशिप में भाला फेंक, शॉट पुट और डिस्कस थ्रो में भाग लेते हुए इस उपलब्धि को दोहराया। वह अंतर्राष्ट्रीय पैरालंपिक खेलों में पदक जीतने वाले पहले भारतीय हैं ।

## टेनिस करियर

बोनिफेस प्रभु कम उम्र में ही टेनिस के प्रति आकर्षित हो गए थे जब वे इवान लेंडल और जॉन मैकेनरो के प्रशंसक हुआ करते थे । यूके में 1996 की वर्ल्ड

व्हीलचेयर एथलेटिक मीट में भाग लेने के दौरान, उन्हें व्हीलचेयर टेनिस का एक खेल देखने को मिला और वह तुरंत इसे पसंद करने लगे। भारत लौटने पर, उन्होंने अभ्यास के लिए अपने कोर्ट का उपयोग करने की अनुमति के लिए कर्नाटक राज्य लॉन टेनिस संघ से संपर्क किया, जो उन्हें प्रदान कर दिया गया । उन्होंने एक स्थानीय टेनिस कोच से बात की और उन्हें खेल सिखाने के लिए प्रभावित किया। वह तेजी से सीखने वाला था और दो साल के समय में उसने टूर्नामेंटों में भाग लेना शुरू कर दिया था।

## कश्मीर से कन्याकुमारी तक जागरूकता अभियान

उन्होंने सरकार की सुगम्य भारत पहल का समर्थन करने के लिए कश्मीर से कन्याकुमारी तक 3,500 किमी ड्राइव करके थम्स अप वीर K2K ड्राइव के साथ अपने जैसे अन्य लोगों के लिए अभियान चलाया । इससे पहले किसी क्वाड्रिप्लेजिक एथलीट ने ऐसा नहीं किया था । "हमें थोड़ा और करने की ज़रूरत है इसलिए मैंने कश्मीर से कन्याकुमारी तक ड्राइव करने का फैसला किया है । जब मैंने अपनी यात्रा शुरू की तो मेरे विकलांग दोस्तों ने भी कहा, 'बोनी शौचालय नहीं हैं और यह और वह'; लेकिन मैंने कहा, 'इसीलिए मैं यह कर रहा हूं' । अगर सब कुछ है तो मुझे लोगों को शिक्षित करने की क्या जरूरत है, मुझे लोगों से लड़ने और उन्हें सांकेतिक भाषा सिखाने की क्या जरूरत है, "प्रभु ने समझाया।

प्रभु कहते हैं, "हमें शिष्टाचार और अवसर चाहिए, उपकार नहीं ।" "हर विकलांग व्यक्ति में एक क्षमता होती है और हमें बस इतना करना है कि उसे उजागर करना है । मुझे उम्मीद है कि यह अभियान कुछ सार्थक हस्तक्षेपों के लिए जमीन तैयार करेगा, दूसरे दिन किसी ने मुझसे पूछा, कन्याकुमारी की यात्रा समाप्त होने के बाद मैं क्या करूंगा । मैंने उनसे कहा, यात्रा समाप्त हो जाती है लेकिन वास्तव में शिक्षा और जागरूकता शुरू होती है।"

तमाम बाधाओं के बावजूद प्रभु ने कभी हार नहीं मानी । फिर भी एक और प्रमाण है कि जहां चाह

है, वहां राह है । पैरा-एथलीटों का समर्थन करने के लिए बहुत कम मदद करने वाली प्रणाली से नाखुश, उन्होंने 2002 में एक व्हीलचेयर अकादमी शुरू करने का फैसला किया । नाम के लिए विकलांगों के लिए सिर्फ एक प्रशिक्षण केंद्र था, जो काफी नहीं है । अकादमी मुंबई, पुणे, चेन्नई, कोच्चि, दिल्ली और बेंगलुरु में केंद्रों के साथ राष्ट्रीय स्तर पर भारत में अच्छा प्रदर्शन कर रही है । हर किसी में क्षमता होती है और व्यवस्था को उसे प्रोत्साहित करना चाहिए। उनके द्वारा शुरू की गई बोनिफेस प्रभु व्हीलचेयर टेनिस अकादमी दूसरों को प्रशिक्षित करने और उनकी प्रतिभा को निखारने के लिए है ।

"विकलांग लोगों के लिए कोई बाधा नहीं है। मेरे माता-पिता ने कभी भी मेरे साथ अलग व्यवहार नहीं किया और मुझे लगता है कि इससे मुझे शक्ति और दृढ़ संकल्प मिला", प्रभु कहते हैं । यूनाइटेड किंगडम में एक कार्यक्रम के दौरान उन्हें व्हीलचेयर टेनिस के बारे में पता चला और जब वे

कर्नाटक वापस आए तो उन्होंने खेलना शुरू किया। "मैंने टूर्नामेंट में भाग लेना शुरू किया और २००५ से २०११ तक एशिया का नंबर एक खिलाड़ी था ।" उस समय सरकार या जनता से पैरा स्पोर्ट्स को कितना कम समर्थन मिला, यह एक उल्लेखनीय उपलब्धि है ।

प्रभु ने सभी ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट के फाइनल में भाग लेते हुए 19 करियर खिताब जीते हैं। वह जेवलिन, टेबल टेनिस और कैरम में तीन बार के राष्ट्रीय चैंपियन भी हैं। प्रभु कहते हैं, "मैं 1998 की अंतर्राष्ट्रीय विश्व पैरा चैंपियनशिप में पहला पदक विजेता था, और मुझे उस जीत पर बहुत गर्व है क्योंकि तब तक स्वतंत्र भारत ने कभी भी विश्व चैंपियनशिप में पदक नहीं जीता था ।"

अभियान में, 2014 पद्म श्री पुरस्कार विजेता अलग-अलग शहरों में रुक रहे हैं, लोक प्रशासन को विकलांगों के बारे में शिक्षित कर रहे हैं, और सार्वजनिक नीति के साथ-साथ उनकी आकांक्षाओं को समझने के लिए 'समान' रूप से मौजूद रहने के लिए एक मंच को प्रोत्साहित कर रहे हैं।

एक एथलीट के रूप में अपने व्यवसाय से व्हीलचेयर टेनिस में अपने बदलाव का वर्णन करते हुए, प्रभु ने कहा कि डिस्कस थ्रो में विश्व रिकॉर्ड होने और विश्व चैंपियनशिप में पदक जीतने वाले पहले भारतीय होने के बावजूद, उन्हें हर बार दो से चार साल तक इंतजार करना पड़ा। टूर्नामेंट चतुर्भुज है।

"एक विकलांग व्यक्ति के लिए, खेल पुनर्वास का सबसे अच्छा रूप है। और टेनिस मुझे पूरी तरह से व्यस्त रखता है।"

## सरकारी समर्थन

प्रभु को लगता है कि विकलांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम, 2016 विधेयक को मंजूरी "देश के लिए सबसे आशावादी चीजों में से एक है।" "प्रगति कर रहा है देश। मुझे लगता है कि विकलांगों को गोले के नीचे से बाहर आना चाहिए। विकलांग लोगों में बहुत अधिक असुरक्षा होती है। आपको अपने लिए चीजें बनानी होंगी," वे कहते हैं। "शुक्र है, खेलो इंडिया जैसे प्लेटफार्मों ने देश में विकलांग खिलाड़ियों के लिए बहुत सारे अवसरों को जन्म दिया है। भारत ने हाल के एशियाई पैरा खेलों में भी अच्छा प्रदर्शन किया था। आज, बोनिफेस व्हीलचेयर खेलों के लिए भारत का ब्रांड एंबेसडर है। वह कई व्यावसायिक उत्पादों के ब्रांड एंबेसडर भी हैं।

## अर्जुन पुरस्कार विवाद

२००५ में, भारत सरकार के युवा मामलों और खेल मंत्रालय ने कथित तौर पर बोनिफेस को सूचित किया कि उन्हें भारत सरकार द्वारा दिए जाने वाले खेलों में उत्कृष्टता के लिए दिए जाने वाले दूसरे सर्वोच्च

पुरस्कार अर्जुन पुरस्कार के लिए चुना गया है । हालाँकि, जब पुरस्कारों की घोषणा की गई, तो बोनिफेस सूची में नहीं थे । इसे दो साल तक दोहराया गया और २००७ में, स्पष्ट लापरवाही के कारण मीडिया में टिप्पणियां आईं । बोनिफेस ने खुद सोचा कि शारीरिक रूप से अक्षम खिलाड़ियों की उपेक्षा क्यों की जा रही है । उन्हें आज तक अर्जुन पुरस्कार नहीं मिला है ।

## खेलकूद से परे

हालाँकि, उनकी असली वीरता खेल से परे है । प्रभु एक मिशन भी चलाते हैं जहां वे उन लोगों को बुनियादी सांकेतिक भाषा सिखाते हैं जिन्हें बधिर और/या गूंगे के साथ संवाद करने की आवश्यकता होती है । "उद्देश्य लोगों को जगाना है । आज, मैं देखता हूं कि विकलांग लोग गायक, नर्तक और कलाकार हैं। वर्तमान पीढ़ी बहुत स्वागत कर रही है ।" प्रभु ने कहा। "बच्चे स्कूल में बात करेंगे, माता-पिता काम पर बात करेंगे, इसलिए विकलांग लोगों को देखने का नज़रिया बदलेगा। यदि वे किसी विकलांग व्यक्ति को देखते हैं, तो वे उसे सहानुभूति की दृष्टि से नहीं देखेंगे, बल्कि उन्हें खेल में एक महान भविष्य के बारे में बताएंगे," ।

## खेल पुरस्कार

- विजेता - सिडनी इंटरनेशनल व्हीलचेयर टेनिस चैंपियनशिप - 2007

- विजेता - एकल - फ़्लोरिडा ओपन - 2004
- विजेता - युगल - फ़्लोरिडा ओपन - 2004
- उपविजेता - सिडनी इंटरनेशनल व्हीलचेयर ओपन टेनिस - 2003
- क्वार्टर फाइनलिस्ट - ऑस्ट्रेलियन ओपन इंटरनेशनल व्हीलचेयर टेनिस - 2003
- विजेता - जापान ओपन व्हीलचेयर टेनिस चैम्पियनशिप - 2001
- विजेता - सिडनी इंटरनेशनल व्हीलचेयर टेनिस चैम्पियनशिप - 1999

- उपविजेता – ऑस्ट्रेलियन ओपन – 1999
- सेमी फ़ाइनलिस्ट एकल – यूएस ओपन – 1998
- सेमी फाइनलिस्ट डबल्स – यूएस ओपन – 1998

बोनिफेस एकल में १७ और युगल में १९ की करियर की सर्वश्रेष्ठ विश्व रैंकिंग पर पहुंच गया है । वह २०११ में एशिया में सर्वोच्च रैंक वाले खिलाड़ी रहे हैं, वर्तमान रैंकिंग नं. २. वह नंबर है । भारत में १ खिलाड़ी । उन्होंने ११ करियर खिताब जीते हैं और सभी ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट के फाइनल में भाग लिया है ।

**पुरस्कार और मान्यताएं**

**पद्म श्री**

- **भारत सरकार – 2014**

- **प्रतिभा भूषण**
- **राइजिंग स्टार ऑफ़ द मिलेनियम अवार्ड**

**एकलव्य पुरस्कार**

- **कर्नाटक सरकार – 2004**

**राज्योत्सव पुरस्कार**

- **कर्नाटक सरकार – 2003 स्वाभिमान प्रशंसा पुरस्कार – दाईजीवर्ल्ड वीकली – 2011**

बोनिफेस व्हीलचेयर खेलों के लिए भारत का ब्रांड एंबेसडर है। वह कई व्यावसायिक उत्पादों के ब्रांड एंबेसडर भी हैं।

## अर्जुन पुरस्कार विवाद

२००५ में, भारत सरकार के युवा मामलों और खेल मंत्रालय ने कथित तौर पर बोनिफेस को सूचित किया कि उन्हें अर्जुन पुरस्कार के लिए चुना गया है, जो भारत सरकार द्वारा दिए जाने वाले खेलों में उत्कृष्टता के लिए दूसरा सर्वोच्च पुरस्कार है । हालांकि, जब पुरस्कारों की घोषणा की गई, तो बोनिफेस सूची में नहीं था। इसे दो साल तक दोहराया गया और २००७ में, स्पष्ट लापरवाही के कारण मीडिया में टिप्पणियां आईं। बोनिफेस ने खुद सोचा कि शारीरिक रूप से अक्षम खिलाड़ियों की उपेक्षा क्यों की जा रही है। उन्हें आज तक अर्जुन पुरस्कार नहीं मिला है ।

# दिव्यांग छात्रों को शिक्षा में सहायता हेतु शिष्यवृत्ति (छात्रवृत्ति) योजना:

हर माता पिता अपने बच्चों को जीवन में सुख और स्थिरता देने के लिए शिक्षा को अनिवार्य समझते हैं । शिक्षा आर्थिक उपार्जन या आर्थिक स्थिरता के साथ साथ मनुष्य को मान-सम्मान भी देती है। बढ़ती महंगाई और अन्य कारणों के चलते आज के समय में साधारण बच्चों को ही नहीं किंतु दिव्यांग छात्रों को भी शिक्षा में समस्याओं का सामना करना पडता है। दिव्यांग बच्चों को आर्थिक कारणों के चलते शिक्षा से वंचित न रहना पडे इसलिए विभिन्न राज्य सरकारें और केन्द्र सरकार भी छात्रवृत्ति प्रदान कर इस समस्या का समाधान कर रही हैं। दिव्यांग छात्रों को प्राथमिक शिक्षा से लेकर कॉलेज और अन्य ऊच्च शिक्षा के लिए गुजरात सरकारने छात्रवृत्ति का प्रावधान किया है। इस छात्रवृत्ति के लिए क्या पात्रता है आदि निम्नलिखित है।

### राज्य सरकार की दिव्यांग शिष्यवृत्ति के लिए पात्रता

- 40 प्रतिशत या उससे अधिक दिव्यांगता वाले छात्र
- अंतिम परीक्षा में 40 प्रतिशत अंको के उत्तीर्ण होना चाहिए
- शैक्षिक संस्थान और अभ्यास में संतोषपूर्ण उपलब्धता
- दिव्यांगता के लिए डोक्टर का प्रमाणपत्र

### कितनी दिव्यांत शिष्यवृत्ति मिलेगी ?

| क्रम नं | कक्षा-शिक्षा | शिष्यवृत्ति का वार्षिक दर (10 महिने तक) |
|---|---|---|
| 1 | कक्षा 1 से 8 (डे.स्कोलर के लिए) | 1500/- |
| 2 | कक्षा 9 से 12 और आई.टी.आई समकक्ष (डे.स्कोलर के लिए) | 2000/- |
| 3 | कक्षा 9 से 12 और आई.टी.आई के समकक्ष (होस्टेल का दर) | 2500/- |
| 4 | बी.ए, बी.एस.सी., बी.कोम और समकक्ष डिग्री के लिए (डे. स्कोलर का दर) | 3000/- |
| 5 | बी.ए, बी.एस.सी., बी.कोम और समकक्ष डिग्री के लिए (हॉस्टेल का का दर) | 3750/- |
| 6 | बी.एड. बी.इ.बी.टेक, एल.एल.बी, बी.सी.ए, एम.बी.बी.एस के समकक्ष डीग्री अभ्याक्रम एवं डिप्लोमा इंजिनियरींगस्टडी इन प्रोफेशनल एण्ड इंजिनियरींग स्टडी इन प्लान्ट ट्रेनींग और उसके समकक्ष (डे.स्कोलर का दर) | 3500/- |
| 7 | बी.एड. बी.इ.बी.टेक, एल.एल.बी, बी.सी.ए, एम.बी.बी.एस के समकक्ष डीग्री अभ्याक्रम एवं डिप्लोमा इंजिनियरींगस्टडी इन प्रोफेशनल एण्ड इंजिनियरींग स्टडी इन प्लान्ट ट्रेनींग और उसके समकक्ष (होस्टेल का दर) | 4500/- |
| 8 | एम.एस.सी, एम.फिल, एल.एल.एम., एम.एड. (डे.स्कोलर का दर) | 3500/- |
| 9 | एम.एस.सी, एम.फिल, एल.एल.एम., एम.एड. (हॉस्टेल का दर) | 4500/- |
| 10 | अंध व्यक्तियों के ले रीडर एलाउन्स (कक्षा 8 के अलावा उपर दर्शाये अन्य तमाम अभ्यासक्रमों के लिए) | 1500/- |

**इस योजना का आवेदनपत्र:**

· दिव्यांग शिष्यवृत्ति प्राथमिक पाठशाला, हाईस्कूल और कॉलेज के आचार्य श्री / छात्र द्वारा आवेदन

**ओनलाइन आवेदन**

**https://www.digitalgujarat.gov.in/ संबंधित जिला समाज सुरक्षा कचहरी को भेजा जाएगा**

**दिव्यांग शिष्यवृत्ति कब नहीं मिल सकती ?**

- दिव्यांग छात्र स्कूल-कॉलेज या शैक्षिक संस्था में अनियमित हो
- अभ्यासक्रम अधूरा छोडने पर
- राज्य सरकार या अन्य किसी स्थान से शिष्यवृत्ति मिलती हो तब.
- ४० प्रतिशत से कम दिव्यांगता और ४० प्रतिशत से कम अंक प्राप्त किए हो

**दिव्यांग शिष्यवृत्ति मंजूर करने की सत्ता जिल्ला समाज सुरक्षा अधिकारी की है**

**दिव्यांग छात्रों के लिए भारत सरकार की शिष्यवृत्ति योजना**

- भारत सरकार के सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के अंतर्गत दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा National Scholarship Portal (www.scholarships.gov.in) पर

- **निम्नलिखित शिष्यवृत्ति की योजना चालु है**

1. दिव्यांग विद्यार्थीयों के लिए प्री मेट्रिक शिष्यवृत्ति (कक्षा 9 और 10)
2. दिव्यांग विद्यार्थीयों के लिए पोस्ट मेट्रिक शिष्यवृत्ति (कक्षा 11 वीं से स्नातक)
3. दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए ऊच्च श्रेणी शिक्षा शिष्यवृत्ति

- (श्रेष्ठता के 240 अधिसूचित संस्थानोमें स्नातक-स्नातकोत्तर डिग्री अथवा डिप्लोमा )

**पात्रता की शरतें :**

- शिष्यवृत्ति केवल भारतीय नागरिक होना अनिवार्य है, गैर भारतीय को नहीं मिलेगी
- 40 प्रतिशत से अधिक अशक्त विद्यार्थी जिनके पास मेडिकल ऑथोरिटी द्वारा नियत दिव्यांगता प्रमाणपत्र हो उन्हें ही लाभ मिलेगा दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 में परिभाषित नियमों के अधिन दिव्यांगता युक्त विद्यार्थी ही इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

**आय सीमा:**

- प्री मेट्रिक तथा पोस्ट मेट्रिक शिष्यवृत्ति 2.50 लाख रुपए।
- ऊच्च श्रेणी शिक्षा शिष्यवृत्ति 8 लाख रुपए।

**आवेदन कैसे करें ?:**

आवेदन www.scholarships.gov.in वेबसाइट पर मंगवाए जाते हैं।

- आवेदन ऑनलाइन ही करना होगा। अनिवार्य प्रमाणपत्र जैसे कि फोटोग्राफ, दिव्यांगता प्रमाणपत्र, आधारकार्ड, परिवार की वार्षिक आय का सक्षम अधिकारी का प्रमाणपत्र, फिस भरने की रसीद की मूल नकल (ट्युशन फिस, परीक्षा फिस, प्रवेश फिस), विद्यार्थी की बैंक पासबुक की नकल, अन्य आवश्यक साधनिक प्रमाणपत्रों के साथ ऑनलाइन आवेदन करना होगा।
- स्कूल-कॉलेज-ग्रान्ट इन एड शैक्षिक संस्थानों के छात्रों को ट्युशन फिस और एडमिशन फिस भरकर ऑनलाइन आवेदन कर के जिला स्तर पर भेजनी होगा।
- जिला-राज्य स्तर पर विद्यार्थीयों के आवेदनों की जांच कर के शिष्यवृत्ति मंजूर नामंजूर करने की कारवाई की जाएगी।
- ऑनलाइन पोर्टल योजना पर किए गये आवेदनों का चयन तथा शिष्यवृत्ति आबंटन की कारवाई दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग, भारत सरकार द्वारा की जाएगी।
- गाईडलाईन तथा अन्य जानकारी http://disabilityaffairs.gov.in वेबसाइट पर उपलब्ध है।

**शिष्यवृत्ति पसंदगी प्रक्रिया के लिए गुणवत्ता के मानदंड:**

- योजना के नियमों के अनुसार पात्रता की शरतों की परिपूर्णता।
- संस्था द्वारा , जिला स्तर पर तथा राज्य स्तर पर आवेदन की जांच कर उनकी स्वीकृति की जाएगी।
- राज्य को प्राप्य स्लोट की संख्या।
- आवश्यक परीक्षा में प्राप्त अंकों के संदर्भ में आवेदक की गुणवत्ता।

**शिष्यवृत्ति का आबंटन:**

- अंतिम चयनित और मेरिट में पसंद किए गये आवेदकों को शिष्यवृत्ति नेशनल स्कोलरशीप पोर्टल के माध्यम से अमली की जाएगी। दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा शिष्यवृत्ति की राशि सीधा आवेदकों के बैंक खातो में डिपोजिट की जाएगी।

# मनो दिव्यांग बच्चों ने मनाया हाफ डे पिकनिक

समर केम्प और नवजीवन चेरीटेबल ट्रस्ट संचालित डॉ.हरिकृष्ण डाहयाभाई स्वामी स्कूल फोर मेन्टली डिसेबल के मनोदिव्यांग छात्रों के लिए आर.डी. फन क्लब में हाफ डे पिकनिक का आयोजन किया गया था। ४२ मनोदिव्यांग बच्चों ने इस रिसोर्ट में स्वीमींग, बोटींग, फिल्म शो के साथ साथ गार्डन में लगे खेलकूद के विभिन्न साधनों का मजा लिया। खेलकूद के साथ साथ बच्चों ने खेलते- खेलते सेल्फी भी खिंची। इस हाफ डे पिकनिक का आयोजन यु.एस.ए. स्थित श्री अजीतभाई शाह की ओर से किया गया था।

# दिव्यांग समूह लग्नोत्सव आयोजन के लिए बैठक

केंद्रीय मंत्री श्रीमान अर्जुन जी मेघवाल के अतिथि विशेष के रुप में एक बचपन और ५५ के बारे में प्रोग्राम किया था। इस प्रोग्राम में उन तमाम दिव्यांग लोगों को जिनकी शादी अभी ६ महीने पहले हुई है उन सब का सम्मान किया गया था। कैबिनेट मंत्री के हाथों ऐसे जोडों को सम्मान और कुछ इनाम दिया गया था। इस कार्यक्रम में केवडिया कोलोनी में आयोजन किए जाने वाले समूह लग्नोत्सव के लिए सब को साथ मिलकर, कंधे से कंधा मिलाकर मेहनत कर के उस आयोजन को सफल बनाने के लिए प्रेरित किया था। साथ ही युवाओं को यह सीख भी दी कि उन्हें आगे बढ़ना चाहिए और नये रोजगार करने चाहिए। आत्मनिर्भर बनकर अपनी परावलंबिता से बाहर आने की सीख भी दी थी। किसे के भी आगे हाथ नहीं फैलाने चाहिए। हमारी संस्था का यही लक्ष्य है कि कोई भी दिव्यांग परावलंबी न रहकर आत्मनिर्भर बने। कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों का रुक्ष्मणी देवी के हाथों स्मान किया गया था। कार्यक्रम में दिव्यांग लोगों को मानव जीवन के लिए जरुरी बातें बताई थी। कार्यक्रम में संस्था के प्रमुख श्रीमान सुनिलजी का स्वागत स्थापक रुक्ष्मणी देवी ने किया था।

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर